Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

ग्रामीण पर्यटन अनुभव, होम–स्टे व्यवसाय एवं स्थानीय खाद्य संस्कृति : अल्मोड़ा जनपद के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन।

1.भुवन चन्द्र जोशी, शोध छात्र, एस. एस. जे. विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
2.डा0 दिनेश जोशी, सहायक प्राध्यापक आइ0 पी0 राजकीय महिला महाविद्यालय हल्द्वानी

सार (Abstract)

ग्रामीण पर्यटन वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है, जो स्थानीय आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्तराखण्ड राज्य का अल्मोड़ा जनपद प्राकृतिक सौन्दर्य, सांस्कृतिक विरासत एवं विशिष्ट कुमाऊँनी खाद्य संस्कृति के कारण ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। होम–स्टे व्यवसाय ग्रामीण पर्यटन का एक प्रमुख घटक है, जो पर्यटकों को स्थानीय जीवन शैली, संस्कृति, परंपराओं तथा भोजन से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अल्मोड़ा जनपद में होम–स्टे व्यवसाय, स्थानीय खाद्य संस्कृति तथा पर्यटक अनुभव के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है।

अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों जैसे शोध–पत्रों, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों एवं पर्यटन विभाग के दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि होम–स्टे व्यवसाय स्थानीय समुदाय के लिए आय एवं रोजगार का महत्वपूर्ण स्रोत बन चुका है। साथ ही, स्थानीय खाद्य संस्कृति पर्यटकों को विशिष्ट एवं प्रामाणिक अनुभव प्रदान करती है, जिससे उनकी संतुष्टि एवं पुनः आगमन की संभावना बढ़ती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि होम–स्टे व्यवसाय स्थानीय संस्कृति एवं पारंपरिक व्यंजनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्य शब्द : होम–स्टे, ग्रामीण पर्यटन, खाद्य पर्यटन, स्थानीय संस्कृति, पर्यटक अनुभव,।

1. प्रस्तावना

पर्यटन विश्व की सबसे तेजी से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटन केवल आर्थिक विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत में ग्रामीण पर्यटन को विशेष महत्व दिया जा रहा है क्योंकि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने, रोजगार सृजन करने तथा सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में सहायक है।

उत्तराखण्ड अपनी प्राकृतिक सुंदरता, हिमालयी परिदृश्य, धार्मिक स्थलों एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण भारत के प्रमुख पर्यटन राज्यों में से एक है। अल्मोड़ा जनपद को कुमाऊँ क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है। यहाँ की पारंपरिक वास्तुकला, लोक कला, धार्मिक स्थल, लोक संगीत तथा खाद्य संस्कृति पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती है।

हाल के वर्षों में होम–स्टे व्यवसाय ने ग्रामीण पर्यटन को नई दिशा प्रदान की है। होम–स्टे पर्यटकों को स्थानीय परिवारों के साथ रहने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे स्थानीय संस्कृति एवं खान–पान को निकट से अनुभव कर सकते हैं। यह मॉडल न केवल पर्यटन अनुभव को समृद्ध बनाता है बल्कि स्थानीय लोगों की आय में भी वृद्धि करता है।

पर्यटकों के आवागमन पर कराये गये एक सर्वेक्षण से निम्नलिखित आंकडे प्राप्त हुए हैं–

तालिका संख्या 1.0

	आवृत्ति	प्रतिशत
वृद्धि हुई है	70	70.0
कोई परिवर्तन नहीं	23	23.0
कमी आयी है	7	7.0
योग	100	100.0

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

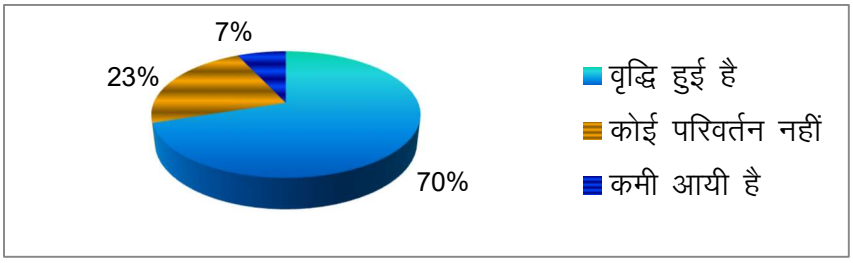

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रेखाचित्र संख्या 1.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 100 उत्तरदाताओं में से 70 (70 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है, 23 (23 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में पर्यटकों की संख्या में कोई परिवर्तन नहीं है, 7 (7 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में पयटकों की संख्या में कमी आयी है।

2. अध्ययन क्षेत्रः अल्मोड़ा जनपद

अल्मोड़ा उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मंडल का एक प्रमुख पर्वतीय जनपद है। इसकी स्थापना 1568 ई. में चंद शासक कल्याण चंद द्वारा की गई थी। जनपद समुद्र तल से लगभग 1,651 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

प्रमुख पर्यटन स्थल

क्रम	पर्यटन स्थल	विशेषता
1	कसार देवी	आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन
2	बिनसर	वन्यजीव एवं प्रकृति पर्यटन
3	जागेश्वर धाम	धार्मिक पर्यटन
4	कटारमल सूर्य मंदिर	ऐतिहासिक पर्यटन
5	सिमतोला	प्राकृतिक पर्यटन
6	ब्राइट एंड कॉर्नर	सूर्योदय एवं सूर्यास्त दृश्य

इन क्षेत्रों में होम–स्टे व्यवसाय तेजी से विकसित हुआ है।

3. होम–स्टे व्यवसाय की अवधारणा

होम–स्टे पर्यटन का ऐसा स्वरूप है जिसमें पर्यटक स्थानीय परिवार के साथ निवास करता है तथा स्थानीय संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन शैली का अनुभव प्राप्त करता है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के अनुसार होम–स्टे ग्रामीण पर्यटन का महत्वपूर्ण माध्यम है, जो पर्यटकों को प्रामाणिक अनुभव प्रदान करता है तथा स्थानीय समुदाय को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ पहुँचाता है।

होम–स्टे के उद्देश्य

1. ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना।
2. स्थानीय रोजगार सृजन।
3. सांस्कृतिक संरक्षण।
4. पर्यटक संतुष्टि में वृद्धि।
5. पलायन नियंत्रण।

4. अल्मोड़ा में होम–स्टे व्यवसाय का विकास

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास योजना के बाद अल्मोड़ा में होम–स्टे व्यवसाय का तीव्र विकास हुआ है।

वर्ष	पंजीकृत होम–स्टे (अनुमानित)
2018	75
2020	130
2022	210
2024	350
2025	400

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कसार देवी, बिनसर, जागेश्वर एवं धौलादेवी क्षेत्र में होम–स्टे पर्यटन का विशेष विकास हुआ है।

5. स्थानीय खाद्य संस्कृतिरू अवधारणा एवं महत्व

खाद्य संस्कृति किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग होती है। पर्यटन के क्षेत्र में स्थानीय भोजन पर्यटकों के अनुभव को विशिष्ट एवं स्मरणीय बनाता है।

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार वर्तमान समय में ''फूड टूरिज्म'' वैश्विक पर्यटन उद्योग का तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है।

कुमाऊँनी खाद्य संस्कृति की विशेषताएँ

- स्थानीय कृषि पर आधारित।
- पोषक एवं जैविक भोजन।
- पारंपरिक पाक विधियाँ।
- मौसमी खाद्य पदार्थों का उपयोग।
- सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व।

6. अल्मोड़ा के प्रमुख पारंपरिक व्यंजन

व्यंजन	प्रमुख सामग्री	पर्यटन महत्व
भट्ट की चुड़कानी	काला भट्ट	स्थानीय पहचान
रस	मिश्रित दालें	पौष्टिक भोजन
झोली	दही एवं बेसन	पारंपरिक स्वाद
चैसू	भुनी उडद दाल	सांस्कृतिक व्यंजन
सिसुणाक साग	बिच्छू घास	विशिष्ट पहाड़ी भोजन
आलू के गुटके	पहाड़ी मसाले	लोकप्रिय नाश्ता
बाल मिठाई	खोया	प्रसिद्ध मिठाई
सिंगौड़ी	खोया एवं मालू पत्ता	सांस्कृतिक प्रतीक
भांगा की चटनी	भांगा,नीबू,गुड.हरी मिर्च	विशिष्ट पहाड़ी चटपटा स्वाद

स्थानीय समुदाय एवं रोजगार पर प्रभाव

ग्रामीण पर्यटन ने अल्मोड़ा जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। विशेषकर होम–स्टे व्यवसाय, स्थानीय खाद्य संस्कृति, हस्तशिल्प, लोक–संगीत एवं पारंपरिक जीवन शैली के माध्यम से स्थानीय लोगों को आय के नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

तालिका संख्या 2.0

	आवृत्ति	प्रतिशत
होमस्टे	70	70.0
हस्तशिल्प	9	9.0
परिवहन	13	13.0
होटल/ढाबा	00	0.0
गाइड सेवा	8	8.0
योग	100	100.0

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

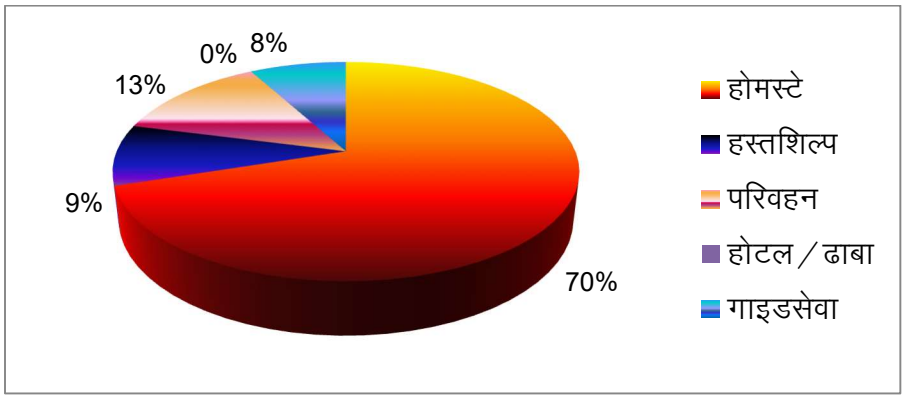

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

रेखाचित्र संख्या 2.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 100 उत्तरदाताओं में से 70 (70 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि होमस्टे के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं, 9 (9 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि हस्तशिल्प के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं, 13 (13 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि परिवहन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं, 8 (8 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि गाइड सेवा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

उत्तराखण्ड सरकार की होम–स्टे योजना के अंतर्गत अनेक ग्रामीण परिवारों ने अपने आवासों को पर्यटकों के लिए विकसित किया है, जिससे उनकी अतिरिक्त आय में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या 3.0

	आवृत्ति	प्रतिशत
धार्मिक	46	46.0
सांस्कृतिक	34	34.0
साहसिक	11	11.0
प्राकतिक / पर्यावरणीय	9	9.0
योग	100	100.0

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

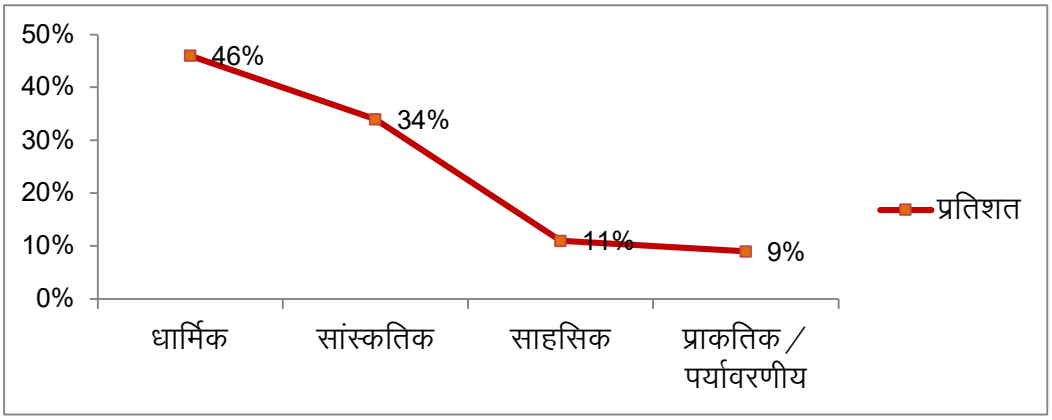

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रेखाचित्र संख्या 3.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 100 उत्तरदाताओं में से 46 (46 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि धार्मिक पर्यटन प्रमुख है, 34 (34 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि सांस्कृतिक पर्यटन प्रमुख है, 11 (11 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि साहसिक पर्यटन प्रमुख है, 9 (9 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि प्राकतिक/ पर्यावरणीय पर्यटन प्रमुख है।

अल्मोड़ा के जागेश्वर, बिनसर, कसार देवी, लमगड़ा, धौलादेवी, हवालबाग एवं रानीखेत जैसे क्षेत्रों में स्थानीय युवाओं को पर्यटन मार्गदर्शक (Tour Guide), परिवहन, होटल, कैफे, ट्रैकिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा होम–स्टे प्रबंधन में रोजगार प्राप्त हुआ है। इससे पलायन की प्रवृत्ति में आंशिक कमी आई है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है।

स्थानीय लोगों की आय का अध्ययन करने के लिए किये गए एक सर्वेक्षण से प्राप्त आंकडे इस प्रकार हैं–

तालिका संख्या 4.0

	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	72	72.0
नहीं	2	2.0
आंशिक रुप से	26	26.0
योग	100	100.0

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

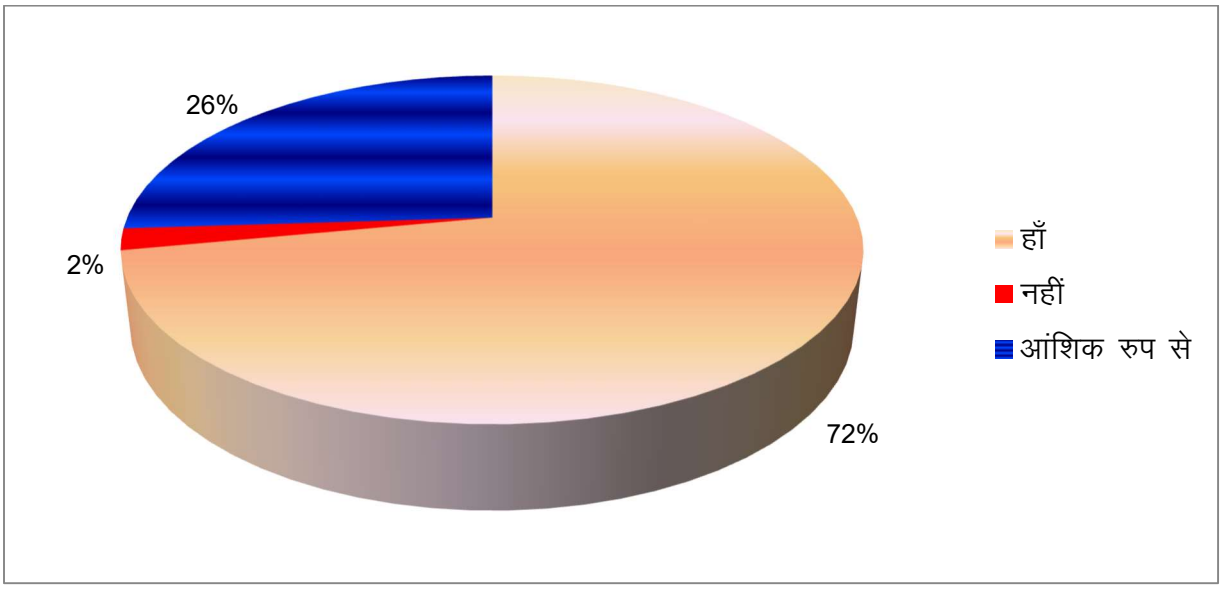

स्रोत–शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण

रेखाचित्र संख्या 4.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 100 उत्तरदाताओं में से 72 (72 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि हुई है जबकि केवल 2 (2 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि नहीं हुई है, 26 (26 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों की आय में आंशिक रुप से वृद्धि हुई है।

महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय व्यंजन जैसे भट्ट की चुड़कानी, झंगोरे की खीर, रस, मंडुवे की रोटी, सिसुणाक साग, बाल मिठाई एवं सिंगौड़ी जैसे उत्पाद पर्यटकों को उपलब्ध कराकर स्वरोजगार प्राप्त कर रही हैं। इससे महिला सशक्तिकरण तथा पारिवारिक आय दोनों में वृद्धि हुई है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

स्थानीय हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र, रिंगाल उत्पाद तथा पारंपरिक कृषि उत्पादों की मांग में भी वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण बाजारों को नया विस्तार मिला है। इसके अतिरिक्त पर्यटन के कारण सड़क, संचार, पेयजल, स्वच्छता तथा डिजिटल भुगतान जैसी आधारभूत सुविधाओं का विकास भी हुआ है।

हालाँकि, पर्यटन के बढ़ते दबाव के कारण कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। पर्यावरण प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या, जल स्रोतों पर दबाव तथा स्थानीय संस्कृति के व्यावसायीकरण जैसी समस्याएँ भविष्य के लिए चिंता का विषय हैं। इसलिए स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी के साथ सतत एवं उत्तरदायी पर्यटन मॉडल अपनाना आवश्यक है।

SWOT विश्लेषण

Strengths (ताकत) • प्राकृतिक सौंदर्य एवं जैव विविधता • समृद्ध सांस्कृतिक विरासत • होम–स्टे योजना का विस्तार • स्थानीय खाद्य संस्कृति की विशिष्टता • धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन स्थल	**Weaknesses (कमजोरियाँ)** • सीमित परिवहन सुविधाएँ • प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी • पर्यटन सूचना केंद्रों का अभाव • डिजिटल प्रचार–प्रसार सीमित • कुछ क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी
Opportunities (अवसर) • ग्रामीण पर्यटन की बढ़ती मांग • ईको–टूरिज्म एवं अनुभवात्मक पर्यटन • स्थानीय उत्पादों का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विपणन • महिला एवं युवा उद्यमिता • डिजिटल मार्केटिंग एवं ऑनलाइन बुकिंग	**Threats (खतरे)** • अनियोजित पर्यटन विकास • पर्यावरणीय क्षरण • सांस्कृतिक मूल्यों का व्यावसायीकरण • जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक आपदाएँ • अत्यधिक पर्यटक दबाव

SWOT विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अल्मोड़ा जनपद में ग्रामीण पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। यदि आधारभूत संरचना, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया जाए तो यह क्षेत्र उत्तराखण्ड के ग्रामीण पर्यटन का उत्कृष्ट मॉडल बन सकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अल्मोड़ा जनपद में ग्रामीण पर्यटन केवल प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ही नहीं, बल्कि स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक खान–पान, धार्मिक विरासत तथा होम–स्टे आधारित पर्यटन अनुभव के कारण भी अत्यंत आकर्षक बन रहा है। वर्तमान समय में पर्यटक केवल दर्शनीय स्थलों का भ्रमण नहीं करना चाहते, बल्कि स्थानीय जीवन शैली, भोजन, लोक–संस्कृति एवं ग्रामीण अनुभवों को निकट से जानने की इच्छा रखते हैं। इसी कारण होम–स्टे पर्यटन का महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

होम–स्टे व्यवसाय ने स्थानीय परिवारों को अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान किया है तथा युवाओं एवं महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न किए हैं। स्थानीय खाद्य संस्कृति ने पर्यटन उत्पाद के रूप में नई पहचान प्राप्त की है, जिससे पारंपरिक व्यंजनों का संरक्षण भी संभव हुआ है। साथ ही ग्रामीण हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला है।

फिर भी परिवहन, विपणन, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यटन प्रबंधन जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यदि इन समस्याओं का समाधान योजनाबद्ध ढंग से किया जाए तथा स्थानीय समुदाय को पर्यटन विकास का प्रमुख भागीदार बनाया जाए, तो अल्मोड़ा जनपद ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

सुझाव

1. प्रत्येक विकासखण्ड में होम–स्टे संचालकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. स्थानीय खाद्य संस्कृति को पर्यटन पैकेज का अनिवार्य भाग बनाया जाए।
3. ग्रामीण पर्यटन स्थलों तक सड़क, इंटरनेट एवं परिवहन सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
4. पर्यावरण संरक्षण हेतु ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एवं प्लास्टिक मुक्त पर्यटन नीति लागू की जाए।
5. स्थानीय युवाओं को पर्यटन गाइड, डिजिटल मार्केटिंग एवं विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण दिया जाए।
6. महिला स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय सहायता एवं विपणन मंच उपलब्ध कराया जाए।
7. स्थानीय कृषि एवं हस्तशिल्प उत्पादों के लिए स्थायी विपणन केंद्र स्थापित किए जाएँ।
8. पर्यटन विभाग एवं ग्राम पंचायतों के बीच समन्वित कार्य योजना विकसित की जाए।
9. ऑनलाइन होम–स्टे बुकिंग एवं प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जाए।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:8(1), August 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

10- पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए सतत (Sustainable) एवं उत्तरदायी (Responsible) पर्यटन मॉडल अपनाया जाए।

संदर्भ सूची

1. भाटिया, ए. के. (2018). *पर्यटन विकास: सिद्धांत एवं व्यवहार* (Tourism Development: Principles and Practices). स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
2. बटलर, आर. डब्ल्यू. (1980). पर्यटन क्षेत्र के विकास चक्र की अवधारणा। *कनाडियन जियोग्राफर, 24*(1), 5–12।
3. भारत सरकार. (2023). *इंडिया टूरिज्म स्टैटिस्टिक्स 2023*. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।
4. उत्तराखण्ड सरकार. (2022). *उत्तराखण्ड होम-स्टे नीति, 2022*. पर्यटन विभाग, उत्तराखण्ड।
5. इंसकीप, ई. (1991). *पर्यटन नियोजन: एकीकृत एवं सतत विकास दृष्टिकोण*। वैन नोस्ट्रैंड रीनहोल्ड।
6. लेन, बी. (1994). ग्रामीण पर्यटन क्या है? *जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म, 2*(1–2), 7–21।
7. मर्फी, पी. ई. (1985). *पर्यटन: एक सामुदायिक दृष्टिकोण*। रूटलेज।
8. ओईसीडी (OECD). (2020). *पर्यटन प्रवृत्तियाँ एवं नीतियाँ*। ओईसीडी पब्लिशिंग।
9. पाइन, बी. जे., एवं गिलमोर, जे. एच. (1999). *अनुभव अर्थव्यवस्था*। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल प्रेस।
10. शार्पले, आर. (2002). ग्रामीण पर्यटन एवं पर्यटन विविधीकरण की चुनौती। *टूरिज्म मैनेजमेंट, 23*(3), 233–244।
11. सिंह, एस. (2004). ग्रामीण पर्यटन एवं सतत विकास। *टूरिज्म रिक्रिएशन रिसर्च, 29*(2), 23–29।
12. संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन (UN Tourism). (2023). *पर्यटन एवं ग्रामीण विकास*। मैड्रिड।
13. संयुक्त राष्ट्र. (2015). *हमारी दुनिया का रूपांतरण: वर्ष 2030 का सतत विकास एजेंडा*।
14. उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद्. (2023). *वार्षिक प्रतिवेदन 2022–23*।
15. वीवर, डी. (2006). *सतत पर्यटन*। एल्सेवियर।
16. विश्व बैंक. (2021). *विकास के लिए पर्यटन*। विश्व बैंक।
17. वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल (WTTC). (2023). *आर्थिक प्रभाव प्रतिवेदन*।
18. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *ग्रामीण पर्यटन नीति रूपरेखा*।
19. सक्सेना, जी. (2006). पर्यटन विकास में सामाजिक पूँजी एवं विश्वास की भूमिका। *करेंट इश्यूज़ इन टूरिज्म, 9*(4–5), 263–285।
20. शर्मा, के. के. (2019). *पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंधन*। कनिष्का पब्लिशर्स।
21. जिला प्रशासन, अल्मोड़ा. (2024). *जिला सांख्यिकीय पुस्तिका*।
22. उत्तराखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन. (2023). *वार्षिक प्रतिवेदन*।
23. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन प्रतिवेदन*।
24. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP). (2021). *मानव विकास प्रतिवेदन*।
25. विश्व आर्थिक मंच (WEF). (2022). *यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक*।
26. हॉल, सी. एम., एवं पेज, एस. जे. (2014). *पर्यटन एवं मनोरंजन का भूगोल*। रूटलेज।
27. स्वारब्रुक, जे. (1999). *सतत पर्यटन प्रबंधन*। सीएबीआई पब्लिशिंग।
28. बोनिफेस, बी., कूपर, सी., एवं कूपर, आर. (2016). *विश्व के पर्यटन गंतव्य*। रूटलेज।
29. कूपर, सी. (2022). *पर्यटन के मूलभूत सिद्धांत*। पियर्सन।
30. वीवर, डी., एवं लॉटन, एल. (2014). *पर्यटन प्रबंधन*। वाइली।